टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ

अभिमत विद्यापीठ
विद्यापीठ भवन, गुलटेकडी, पुणे - ४११०३७
दूरध्वनी क्र. २४२६६७००, २४२६१८५६, २४२६४६९९

दूरशिक्षण विद्याशाखा

अभ्यासक्रम

एम. ए. हिंदी

अभ्यासक्रम

कालावधी - २ साल | **कूल प्रश्नपत्र** - ८ (प्रति वर्ष ४)

अंक - प्रति प्रश्नपत्र १०० अंक, | **कूल अंक** - ८००

विशेष सूचना - विद्यापीठ नियम के अनुसार हर साल प्रथम और द्वितीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों के लिए भाग १ तथा भाग २ में से उस साल जो भाग निर्धारित हुआ है, उसी को प्रवेश लेना अनिवार्य है । उदा.

	प्रवेश का साल (प्रथम तथा द्वितीय दोनो वर्षो के विद्यार्थियों के लिए)
भाग १	२०११-२०१२, २०१३-२०१४, २०१५-१६ इ.
भाग २	२०१२-२०१३, २०१४-२०१५ २०१६-१७ इ.

- मार्गदर्शक अध्ययन साहित्य उपलब्ध
- पुने में अध्ययन हेतू जनवरी महिने में संपर्कसत्र का आयोजन

परीक्षासंबंधी नियम तथा सूचनाएँ -

प्रश्नपत्र का स्वरूप -

कूल अंक - १००, **अवधी -** ३ घंटे **कूल प्रश्न -** ५

प्रश्न १ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब) प्रश्न २ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब)

प्रश्न ३ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब) प्रश्न ४★ - दीर्घोत्तरी प्रश्न (अ) अथवा (ब)

प्रश्न ५ - टिप्पणी (चार में से कोई भी दो)

★ (जिस प्रश्नपत्र में ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न संभव है उस प्रश्नपत्र में चौथा प्रश्न ससंदर्भ व्याख्या का रहेगा । उस प्रश्न के अंतर्गत चार उपप्रश्नों में से किसी भी दो उपप्रश्नों के उत्तर अपेक्षित होंगे)

परीक्षासंबंधी नियम -

परीक्षा की पद्धती - वार्षिक

अपेक्षित काल - मे महिने में

उत्तीर्णता के लिए प्रत्येक प्रश्नपत्र में आवश्यक कम से कम अंक - १०० में से ४०

ATKT - प्रथम वर्ष की परीक्षा में अनुत्तीर्ण या अनुपस्थित रहनेवाले छात्र द्वितीय वर्ष में प्रवेश पा सकते हैं ।

श्रेणी व्यवस्था -

- ४०% ते ४९.९९% - तृतीय श्रेणी
- ५०% ते ५४.९९% - द्वितीय श्रेणी
- ५५% ते ५९.९९ % - उच्च द्वितीय श्रेणी
- ६०% ते ६९.९९% - प्रथम श्रेणी
- ७०% तथा उसके ज्यादा - विशेष प्राविण्य

एम. ए. हिंदी

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ द्वारा दूरशिक्षण विद्याशाखा के अंतर्गत एम्. ए. हिंदी पाठ्यक्रम सन २००५-०६ के शैक्षणिक साल से शुरू हुआ है। पूरे पाठ्यक्रम का विभाजन दो वर्षों के लिए होगा। छात्रों को प्रथम वर्ष में प्रश्नपत्र १ से प्रश्नपत्र ४ तक का और द्वितीय वर्ष में प्रश्नपत्र ५ से ८ तक का अध्ययन करना होगा।

विभागप्रमुख

एम. ए. हिंदी संक्षिप्त रूपरेखा

भाग - १

१. प्रश्नपत्र १ : आधुनिक गद्य (H - 101)

२. प्रश्नपत्र २ : प्राचीन काव्य (H - 102)

३. प्रश्नपत्र ३ : भारतीय एवं पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र एवं आलोचना (H- 103)

४. ★प्रश्नपत्र ४ : वैकल्पिक : विशेष साहित्यकार उपान्यासकार प्रेमचंद (H - 104)
महाकवि सूरदास (H - 105)

★प्रश्नपत्र ४ के लिए केवल 'उपन्यासकार प्रेमचंद' यही विकल्प उपलब्ध है।

भाग - २

५. प्रश्नपत्र ५ : आधुनिक काव्य (H - 201)

६. प्रश्नपत्र ६ : भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा (H - 202)

७. प्रश्नपत्र ७ : हिंदी साहित्य का इतिहास (H - 203)

८. ★प्रश्नपत्र ८ : वैकल्पिक : अनुवाद विज्ञान (H - 204)
प्रयोजनमूलक हिंदी (M - 205)

★ प्रश्नपत्र ८ के लिए केवल 'अनुवाद विज्ञान' यही विकल्प उपलब्ध है।

एम. ए. हिंदी - विस्तारित पाठ्यक्रम

एम. ए. हिंदी पाठ्यक्रम के उद्देश :

१) छात्रों में साहित्य को समझने, उससे प्रेम करने की क्षमता बढ़ाना।

२) छात्रों में साहित्य के आस्वादन और मूल्यांकन की दृष्टि को बढ़ावा देना।

२) हिंदी साहित्य की प्राचीन व आधुनिक गद्य-पद्य विधाओं का तात्त्विक परिचय कराना।

४) साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्य विधाओं के विकास का परिचय छात्रों को कराना।

५) छात्रों में साहित्यिक कृतियों का विवेचन, उनकी समीक्षा करने की दृष्टि विकसित करने का प्रयास करना।

६) हिंदी भाषा के गण्यमान् साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व से छात्रों का परिचय कराना और उनके योगदान पर प्रकाश डालना, जिससे छात्रों में साहित्य सृजन की अभिलाषा अंकुरित, पल्लवितऔर फलित हो।

७) प्राचीन और आधुनिक भारतीय और पाश्चात्त्य समीक्षा सिद्धांतों और आलोचना प्रणालियों का अध्ययन कराना।

८) हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता का परिचय कराना।

९) हिंदी के बहुमूल्य साहित्य के पठन-पाठन से छात्रों में अस्मिता का भाव जगाना।

१०) छात्रों को साहित्य पठन के साथ-साथ नैतिक मूल्यों के महत्त्व से परिचित कराना।

भाग १

प्रश्नपत्र १ - आधुनिक गद्य (H - 101) **अंक : १००**

१. **उपन्यास :**
विपात्र - ले. गजानन माधव मुक्तिबोध
प्रकाशक - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,
१८ इन्स्टिट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली - ११०००३
'चौथा संस्करण', १९८७

२. **कहानी :**
आधुनिक हिंदी कहानी - ले. दिनेश्वर प्रसाद
जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद. प्रथम संस्करण १९९६,
('घर' तथा 'ज्वारभाटा' को छोड़कर अन्य दस कहानियाँ)

३. **नाटक :**

धुवस्वामिनी - ले. जयशंकर प्रसाद

४. **निबंध**

प्रिया नीलकंठी - ले. कुबेरनाथ राय

५. **रेखाचित्र/संस्मरण**

अतीत के चलचित्र - ले. महादेवी वर्मा

भारती भंडार, इलाहाबाद

चतुर्थ संस्करण २००७,

सूचनाएँ -

१) उपर्युक्त रचनाओं का तात्त्विक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन अपेक्षित है ।

२) प्रश्नपत्र में निर्धारित पुस्तकों पर ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा ।

संदर्भ ग्रंथ -

१) प्रेमचंदोत्तर उपान्यासों की शिल्पविधि - डॉ. सत्यपाल चुघ

२) हिंदी उपन्यास कला - प्रतापनारायण टंडण

३) हिंदी उपन्यास - सौ वर्ष - संपा. आ. रामदरश मिश्र

४) समकालीन हिंदी उपन्यास - डॉ. विवेकी राय

५) नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति - देवीशंकर अवस्थी

६) साहित्य समालोचना -डॉ. रामकुमार वर्मा

७) आज की हिंदी कहानी - डॉ. धनंजय

८) नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर

९) कहानी और कहानीकार - सोहनलाल जिज्ञासु

१०) उपन्यास स्थिती और गति - डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

११) हिंदी रंगकर्म दशा और दिशा - डॉ. जयदेव तनेजा

१२) हिंदी नाटक और रंगमंच - समकालीन परिदृश्य, डॉ. ब्रजलाल किशोर

१३) रंगमंच और नाटक की भूमिका - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

१४) ध्रुवस्वामिनी - विचार और विश्लेषण - संपा. गोविंद चातक एवं डॉ. उर्मिला गुप्त

१५) प्रसाद के नाटक - सर्जनात्मक धरातल - डॉॅ. गोविंद चातक

१६) हिंदी रेखाचित्र - सिद्धांत और विकास - डॉ. मक्खनलाल शर्मा

१७) महादेवी का गद्य साहित्य - विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्धन सिंह

१८) गद्यलेखिका - महादेवी - योगराज थानी

१९) महादवी का गद्य - डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित

२०) महादेवी वर्मा - संपा. शचीरानी गुर्ट

२१) हिंदी रेखाचित्र - डॉ. हरवंशलाल शर्मा

२२) विविध विधाओं के प्रतिनिधि साहित्यकार : डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी - विनोदिनी सिंह

प्रश्नपत्र २ - प्राचीन काव्य (H - 102) अंक : १००

उद्देश -

१) हिंदी के मध्यकालीन (भक्तिकाल और रीतिकाल) काव्यप्रवृत्तियों की जानकारी देना।

२) तत्कालीन कुछ प्रमुख कवियों की रचनाओं के प्रत्यक्ष अध्ययन द्वारा उक्त काव्य से परिचित कराना।

३) पाठ्यकवियों की कृतियों के आधारपर छात्रों की समीक्षण क्षमता वृद्धिंगत कराना।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि -

१) मलिक मुहम्मद जायसी	२) कबीर
३) गोस्वामी तुलसीदास	४) मीरा
५) बिहारी	६) घनानंद

सूचनाएँ -

१) परीक्षाओं में संसदर्भ व्याख्या का अनिवार्य प्रश्न पूछा जाएगा।

२) निर्धारित कवियों की रचनाओं का अध्ययन तत्कालीन काव्य प्रवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अपेक्षित है।

१) पद्मावत : मलिका मुहम्मद जायसी, संपादक - वासुदेवशरण अग्रवाल,
प्रकाशक - साहित्य सदन, चिरगाव, झांसी
(केवल मानसरोदक एवं नागमती वियोग खंड)

अध्ययनार्थ विषय :

१) प्रेमभाव	२) सौंदर्य-वर्णन
३) वियोग-वर्णन	४) रहस्यभावना एवं दर्शन
५) प्रकृति चित्रण	६) नारी चित्रण
७) लोकतत्त्व	८) जायसी की काव्यकला

२) कबीर वाणी-सुधा - कबीर, **संपादक -** डॉ. पारसनाथ तिवारी,
प्रकाशक - राका प्रकाशन, इलाहाबाद

१. पद क्रमांक -

४, ९, १२, १४, २१, ४१, ५०, ५६, ५९, ६५ = १० पद.

२. **साखी -** १. सत्गुरू महिमा कौ अंग

५, ६, ९, १३, १७, २४, २८, ३४ = ८

३. **साध-महिमा कौ अंग - साखी क्रमांक**

८, ९, २०, २५, २८, ३५, ३७, ३९ = ८

४. **परचा कौ अंग - साखी क्रमांक**

१, २, ४, ८, १७, २५, ३७, ४१ = ८

३. **कुल ४० दोहे**

अध्ययनार्थ विषय -

१. कबीर की रहस्यानुभूति और प्रेम
२. कबीर की भाषा
३. कबीर की दार्शनिक विचारधारा
४. हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान
५. कबीर काव्य की प्रासंगिकता
६. कबीर के निर्गुण - राम का स्वरूप

३) **विनय पत्रिका : गोस्वामी तुलसीदास**

संपादक : वियोगी हरि, प्रकाशन-सस्ता साहित्य मंडल, एन ७७, कॅनाट सर्कल, नई दिल्ली.

पदक्रमांक : १, ५, ७६, ७८, ८६, ८८, ८९, ९०, १०१, १०५, १११, ११५, १५५, १६२, १६७, १७२, १७३, १७४, १९८ = १९ पद.

अध्ययनार्थ विषय :

१. विनयपत्रिका का हेतु
२. विनय पत्रिका की विशेषता
३. भक्ति पद्धति
४. रसयोजना और भावात्मकता
५. भाषा एवं कवित्व
६. गीतात्मकता
७. भक्तिकाव्य में विनयपत्रिका का स्थान
८. कबीर और तुलसी के राम

४) **मीराबाई की पदावली - मीरा, संपादक-आचार्य**

परशुराम चतुर्वेदी -१८९८ शकाब्द : सन १९७६ ई. हिंदी साहित्य संमेलन : प्रयाग

प्रथम खंड -

स्तुति वन्दना - पदक्रमांक १, २

विनय - पदक्रमांक ३, ४

शब्द - पदक्रमांक ९

रूपराग - पदक्रमांक १२

प्रेमासक्ति - प्रेमाभिलाषा - पदक्रमांक - १३, १४, १७, २०

अविनाशी प्रियतम - २२, २३, ३१, ३४, ३६, ३७, ३९

वियोग - ४३, ४६, ५३ = २० पद.

द्वितीय खंड -

स्तुति - विरहानुभाव - पदक्रमांक - ६२, ६९, ७०, ७२, ७६.

राग सावन- ८१, ८३

पदक्रमांक - ८७, १०२, १२१, १२९, १३१, १४३, १४६, १५०, १५९, १६१, १६६, १७५, १९९ = २० पद.

कुल - ४० पद

अध्ययनार्थ विषय :

१. मीरा की मधुरा भक्ति

२. मीरा की प्रेमसाधना

३. मीरा की वेदनानुभूति

४. मीरा की रस योजना

सूचना -

१) संदर्भ ग्रंथ के लिए मीराबाई की पदावली में परिशिष्ट में सामग्री है।

२) हिंदी साहित्य के इतिहास की पुस्तकों में भी सामग्री मिल जाएगी।

३) निर्धारित ५० पदों में से संदर्भ व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य रूप से पूछा जाएगा।

५) **बिहारी - रीति काव्यधारा - संपादक : डॉ. रामचंद्र तिवारी, डॉ. रामफेर त्रिपाठी**

प्रकाशक - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(इस ग्रंथ से बिहारी के संपूर्ण छंद)

अध्ययनार्थ विषय -

१. रीतिसिद्ध कवि बिहारी

२. सौंदर्य चित्रण

३. बिहारी का संयोग-वियोग श्रृंगार निरुपण

४. बिहारी की नीति एवं भक्ति

५. काव्य सौंदर्य

६. भाषाशैली

७. बिहारी की अलंकार योजना

६) **घनानंद - रीति काव्यधारा - संपादक : डॉ. रामचंद्र तिवारी, डॉ. रामफेर त्रिपाठी**

प्रकाशक - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(इस ग्रंथ से घनानंद के संपूर्ण छंद)

अध्ययनार्थ विषय -

१. घनानंद की प्रेमानुभूति

२. घनानंद की विरहानुभूति

३. घनानंद की भगवत् भक्ति

४. घनानंद की काव्य की विशेषताएँ

संदर्भग्रंथ :

१) मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य - डॉ. शिवसहाय पाठक

२) जायसी का पद्मावत : काव्य और दर्शन - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

३) पद्मावत में काव्य संस्कृति और दर्शन - डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

४) पद्मावत का काव्य सौंदर्य - डॉ. चंद्रबली पांडेय

५) कबीर : आचार्य हजारप्रसाद द्विवेदी

६) कबीर की विचारधारा : डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

७) कबीर साहित्य की परख - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

८) कबीर साधना और साहित्य - डॉ. प्रतापसिंह चौहान

९) निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

१०) तुलसीदास और उनका काव्य - डॉ. रामदत्त भारद्वाज

११) तुलसी के भक्त्यात्मक गीत - डॉ. वचनदेवकुमार

१२) बिहारी का नया मूल्यांकन - डॉ. बच्चनसिंह

१३) बिहारी सतसई, वैज्ञानिक समीक्षा - डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त

१४) बिहारी मीमांसा - डॉ. रामसागर त्रिपाठी

१५) बिहारी का काव्यलालित्य - डॉ. रमाशंकर तिवारी

१६) घनानंद - पं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

१७) घनानंद - डॉ. कृष्णदेव वर्मा

प्रश्नपत्र ३ -

भारतीय एवं पाश्चात्त्य साहित्य - शास्त्र एवं आलोचना (H - 103) **अंक : १००**

उद्देश्य -

१) छात्रों को भारतीय तथा पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्र (काव्यशास्त्र) का संक्षिप्त परिचय देना।

२) भारतीय और पाश्चात्त्य साहित्यशास्त्रीय सिद्धांतों का ज्ञान व उनके विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय देना।

३) आलोचना की विभिन्न प्रणालियों से उन्हें परिचित कराना।

अध्ययनार्थ विषय

१) भारतीय (काव्यशास्त्र)

१. भारतीय साहित्यशास्त्र (काव्यशास्त्र) के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय।

२. **रससिद्धांत** - रस का स्वरुप, भरतमुनी का रससूत्र और भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनवगुप्त द्वारा की गई तत्संबंधी व्याख्याओं की विवेचना। साधारणीकरण की अवधारणा और

उसके संबंध में भट्टनायक, अभिनवगुप्त, पंडितराज जगन्नाथ आचार्य विश्वनाथ तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मतों की विवेचना। करुण रस की आस्वाद्यता। वर्तमान संदर्भ में रससिद्धांत।

३. **अलंकार सिद्धांत** - 'अलंकार' शब्द की व्युत्पत्ति, अलंकार की परिभाषा, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार और रस, काव्य में अलंकार का स्थान

४. **रीतिसिद्धांत** - रीति शब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीति के गुण, रीतिभेद, रीति और शैली।

५. **ध्वनिसिद्धांत** - 'ध्वनि' शब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत ध्वनि और शब्दशक्ति, ध्वनि के भेद-अभिधामूला लक्षणामूला, ध्वनि के आधारपर काव्य के भेद, ध्वनिसिद्धांत का महत्त्व।

६. **वक्रोक्ति सिद्धांत** - वक्रोक्ति की परिभाषा कुंतकपूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति, सिद्धांत का स्वरूप - भेद और महत्त्व।

७. **औचित्य सिद्धांत** - औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेन्द्र पूर्व औचित्य - विचार, आचार्य क्षेमेन्द्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्त्व।

२) **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

१. **पाश्चात्य -** काव्यशास्त्र के विकासक्रम का संक्षिप्त परिचय।

२. **अरस्तू के काव्यसिद्धांत** - अनुकरण सिद्‌धांत, अनुकरण की व्याख्या, सिद्‌धांत का स्वरूप. अनुकरण के संदर्भ में प्लेटो और अरस्तू के विचारों का तुलनात्मक परिचय। विरेचन सिद्धांत : विरेचन (कर्थासिस) की अलग-अलग व्याख्याएँ। विरेचन - स्वरूप।

३. **उदात्त सिद्धांत** - लोंजाइनस द्वारा उदात्त की व्याख्या, सिद्‌धांत का स्वरूप, उदात्त के अंतरंग तत्त्व , बहिरंग तत्त्व, विरोधी तत्त्व। काव्य में उदात्त का महत्त्व।

४. **यथार्थवाद -** यथार्थ का स्वरूप, आदर्श और यथार्थ, यथार्थवाद के भेद, मनोविश्लेषणवादी यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद।

५. **अभिव्यंजनावाद** - क्रोचे की कलाविषयक धारणा अंतः प्रज्ञा, अंतः प्रज्ञा और अभिव्यंजना का नित्यसंबंध, अभिव्यंजना और कला का संबंध। अभिव्यंजनावाद और वक्रोक्ति सिद्धांत।

६. **प्रतीकवाद और बिंबवाद** - प्रतीकवाद का उद्‌भव। प्रतीकवाद की व्याख्या, प्रतीकों का वर्गीकरण, प्रतीकवाद का महत्त्व और सीमाएँ। हिंदी साहित्य पर प्रभाव। बिंब का अर्थ और प्रयोग। काव्य-बिंब का प्रयोजन। बिंब के आवश्यक गुण बिंबों का वर्गीकरण। बिंब और प्रतीक की तुलना।

७. **संप्रेषण सिद्‌धांत -** संप्रेषण सिद्धांत - स्वरूप और महत्त्व, रिचर्डस का योगदान।

८. **निर्वैयक्तिकता सिद्‌धांत** - इलियट की निर्वैयक्तिकतासंबंधी धारणा, परिवर्तित धारणा, व्यक्तिगत भावों का सामान्यीकरण। भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण से तुलना।

९. **संरचनावाद** - स्वरूप, महत्त्व और सीमा।

१०. **आलोचना -** स्वरूप और उद्देश्य, आलोचक के गुण, आलोचना और अनुसंधान आलोचना की विभिन्न प्रणालियाँ, सैद्धांतिक, व्याख्यात्मक, तुलनात्मक, स्वच्छंदतावादी, मनोवैज्ञानिक एवं प्रगतिवादी आलोचना।

संदर्भग्रंथ :

१) भारतीय साहित्यशास्त्र खंड १ और २ आ. बलदेव उपाध्याय।

२) शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत भाग - १ और भाग - २, डॉ. गोविंद त्रिगुणायत।

३) काव्यशास्त्र - डॉ. भगीरथ मिश्र

४) रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र

५) साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्‌धांत - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

६) भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. उदयभानू सिंह

७) भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्‌धांत - डॉ. कृष्णदेव शर्मा

८) भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्‌धांत - डॉ. कृष्णदेव झारी

९) रस - मीमांसा - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

१०) ध्वनि संप्रदाय और इसके सिद्‌धांत - डॉ. बच्चूलाल अवस्थी 'ज्ञान'

११) रस सिद्‌धांत : स्वरूप और विश्लेषण - डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित

१२) औचित्य विमर्श - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

१३) पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा

१४) समीक्षालोक - डॉ. भगीरथ दीक्षित

१५) पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्‌धांत - डॉ. कृष्णदेव शर्मा

१६) पाश्चात्य का काव्यशास्त्र - डॉ. रामपूजन तिवारी

१७) अरस्तू का काव्यशास्त्र - डॉ. नगेन्द्र

१८) उदात्त के विषय में - डॉ. निर्मला जैन

१९) रिचर्डस के आलोचना सिद्‌धांत - डॉ. शंभुदत्त झा

२०) टी. एस. इलियट के आलोचना सिद्‌धांत - डॉ. शिवमूर्ति पांडेय

२१) हिंदी आलोचना - उद्‌भव और विकास - डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र

२२) आलोचना के बदलते मानदंड और हिंदी साहित्य - डॉ. शिवचरण सिंह

प्रश्नपत्र - ४ वैकल्पिक - विशेष साहित्यकार

विकल्प - १ प्रेमचंद - उपन्यासकार (विशेष स्तर) (H - 104) अंक : १००

केवल निम्नलिखित उपन्यास

१) गोदान

२) सेवासदन

३) रंगभूमी

४) गबन

५) निर्मला

सूचनाएँ -

१) गोदान', 'गबन' और 'निर्मला' से ससंदर्भ व्याख्या का अनिवार्य प्रश्न पूछा जाएगा ।

२) अन्य उपन्यासों की संक्षिप्त जानकारी अपेक्षित ।

अध्ययनार्थ विषय -

१. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में उठाई गई सामाजिक समस्याएँ

२. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में नारी

३. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में आम आदमी का चित्रण

४. प्रेमचंद जी का जीवन-दर्शन उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में ।

५. उपन्यासों के नायक और उनका उपन्यासों में स्थान

६. समस्यामूलक उपन्यासों की परंपरा में प्रेमचंद के उपन्यास

७. उपन्यासों की भाषा

८. उपन्यासों में मनोविज्ञान

९. उपन्यासों में पात्रों का चरित्र - चित्रण

१०. उपन्यासों के सृजन का मूल उद्देश्य

११. उपन्यासों के कथानक

१२. उपन्यासों में अभिव्यक्त आदर्शोन्मुखी यथार्थ वाद

संदर्भग्रंथ -

१) हिंदी उपन्यास : उद्‌भव और विकास

२) उपन्यास का शिल्प - गोपाल राय

३) हिंदी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन

४) उपन्यास : स्थिति और गति - डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

५) हिंदी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास - प्रेमबिहारीलाल भटनागर

६) हिंदी के आंचलिक उपन्यास - सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ - विमलशंकर नागर

७) हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद - डॉ. त्रिभुवनसिंह

८) हिंदी उपन्यास : एक सर्वेक्षण - रामविनोद सिंह

विकल्प २ - महाकवि सूरदास (विशेष स्तर) (H - 105) **अंक : १००**

उद्देश्य -

१) तत्कालीन परिस्थितियों (दार्शनिक - सांस्कृतिक, साहित्यिक) के परिप्रेक्ष्य में महाकवि सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेय की जानकारी देना।

२) महाकवि सूरदास की काव्यगत शक्ति और सीमाओं से परिचित कराना।

३) महाकवि सूरदास के काव्य की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

पाठ्यग्रंथ -

१) सूर सागर सार - संपादक - डॉ. धीरेंद्र वर्मा

प्रकाशक - साहित्यभवन, प्रा. लि. इलाहाबाद

(केवल निम्नलिखित अंश : विनय तथा भक्ति गोकुल लीला, वृंदावन लीला, राधाकृष्ण)

२) भ्रमरगीत सार - संपादक आचार्य रामचंद्र शुक्ल, उपसंपादक - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(त्रयोदश - परिशोधित संस्करण)

(क) ससंदर्भ व्याख्या हेतु :

निर्धारित पाठ्यग्रंथ सूरसागर के निम्नलिखित अंश

विनय तथा भक्ति - पदक्रमांक - १, २, ५, ८, १२, १३, १५, २३, ३३, ३५, ३७, ३९, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५३, ५४, ४६ = २० पद.

गोकुल लीला - ४, ७, १२, १६, १९, २६, ३३, ३५, ३८, ४१, ४४, ५०, ५३, ६०, ६७ = १५ पद.

वृंदावन लीला - २, ३, १०, २४, ३२, ३७, ३८, ४८, ५२, ६०, ७२, ७७, ७९, ८७, १०६, ११७, १२८, १३६, १४७, १४९, १५०, १६०, १६६, १६७ = २४ पद.

राधाकृष्ण - १, २, ८, ११, १६, २३, २७, ३०, ४१, ५३, ७३, ९०, १००, १०३, १६२ = १५.

कुल - ७४ पद.

'भ्रमरगीत सार' में से पद - क्रमांक - २, ७, ९, १०, १८, २२, २३, २८, ३१, ३४, ३६, ३७, ३८, ४२, ४४, ५२, ६१, ६४, ६५, ६७, ७४, ७५, ७६, ८५, ८९, ९१, ९२, ९७, १००, १०७, ११६, १२०, १२२, १२३, १३४, १३६, १३८, १४६, १५२, १५३, १५९, १६७, १६९, १७२, १७५.

कुल - ४५ पद.

अध्ययनार्थ विषय -

१) सूरसागर सार

१. सूर की जीवनी एवं व्यक्तित्व

२. सूर का रचना संसार

३. सूर काव्य की दार्शनिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सामाजिक पृष्ठभूमि

४. सूर के काव्य में समाज और संस्कृति

५. सूर - काव्य में लोकतत्व

६. सूर का जीवन दर्शन

७. सूर की यशोदा

८. सूर का वात्सल्य वर्णन

९. सूर काव्य में बाल-मनोविज्ञान

१०. सूर की राधा और सूर के कृष्ण

११. सूर की भक्तिभावना और आध्यात्मिक चिंतन

१२. सूर का प्रकृति-चित्रण

१३. सूर का लीला वर्णन

१४. सूर की सौंदर्य भावना

२) भ्रमरगीत सार

१. भ्रमरगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि

२. सूरकाव्य में योग बनाम भक्ति

३. सूरकाव्य में विरह - वर्णन

४. सूरकाव्य में संयोग - वर्णन

५. सूरकाव्य रूप - वर्णन

६. भ्रमरगीत एक उपालंभ काव्य

७. सूर की गोपियाँ और सूर के उद्धव

८. सूर की काव्यकला और गीतात्मकता

९. सूर की भाषा और छंदविधान अलंकार

१०. सूरकाव्य में व्यंजना और वाग्वैदग्ध्य

संदर्भ ग्रंथ -

१) सूर - सौरभ - डॉ. मुंशीराम शर्मा

२) सूरदास और उनका साहित्य

३) भारतीय साधना और सूर साहित्य - डॉ. हरिवंशलाल शर्मा

४) सूर की काव्यकला - डॉ. मनमोहन गौतम

५) सूर - साहित्य - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

६) सूर की भाषा - डॉ. प्रेमनारायण टंडन

७) कृष्णकाव्य और सूर - सांस्कृतिक संदर्भ - डॉ. प्रेमशंकर

८) सूरदास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

९) महाकवि सूरदास - आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

१०) सूरसाहित्य का छन्द - शास्त्रीय अध्ययन - डॉ. गौरीशंकर मिश्र

भाग - २

प्रश्नपत्र ५ : आधुनिक काव्य (H - 201) **अंक : १००**

उद्देश्य -

१) आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय कराना।

२) आधुनिक काल के प्रबंध एवं मुक्तक काव्य के तात्त्विक स्वरूप की जानकारी देना और आधुनिक युग के काव्यप्रकारों के विकासक्रम का परिचय देना।

३) छात्रों में आधुनिक काल की काव्य रचनाओं के आस्वादन, अध्ययन और मूल्यांकन की दृष्टि विकसित करना।

पाठ्यग्रंथ :

१) कामायनी (महाकाव्य) : जयशंकर प्रसाद (चिंता, श्रद्धा, इड़ा व आनंद सर्गों का अध्ययन)

२) संशय की एक रात : नरेश मेहता - प्रकाशक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

३) ग्राम्या : सुमित्रनंदन पंत, प्रकाशक - भारती भंडार, लीडर प्रेस प्रयाग.

(३) 'ग्राम्या' की केवल निम्नलिखित कविताएँ :

१. स्वप्नपट	२. ग्रामकवि
३. ग्राम	४. ग्रामदृष्टि
५. ग्रामयुवती	६. कठपुतली
७. गांव के लड़के	८. वह बुड्ढा
९. धोबियों का नृत्य	१०. ग्राम वधू
११. महात्माजी के प्रति	१२. ग्रामदेवता
१३. संध्या के बाद	१४. रेखाचित्र
१५. दिवा - स्वप्न	१६. कला के प्रति
१७. मजदूरनी के प्रति	१८. नारी
१९. संस्कृति का प्रश्न	२०. बापू
२१. याद	२२. विनय

(४) दिशांतर :

संपादक. डॉ. परमानंद श्रीवास्तव तथा डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अनुराग प्रकाशन, चौक वाराणसी, संस्करण १९९४

केवल निम्नलिखित ४ कवि व उनकी कविताएँ

१) अज्ञेय
२) शमशेर बहादुर सिंह
३) गजानन माधव मुक्तिबोध
४) रघुवीर सहाय

(५) **जहाँ शब्द हैं। -**

संपादक- डॉ. प्रभाकर माचवे, माचवे प्रकाशन,

ई - १८०, ग्रेटर कैलाश - II, नई दिल्ली - ११० ०४८

केवल निम्नलिखित २० कविताएँ

१) नया
२) स्वः
३) हिरण्मयेन पात्रेण सत्य स्थापिहितम् मुखम्।
४) समाज - परमेश्वर
५) घर
६) चीजें
७) महुआ
८) दो दल
९) बोध
१०) शक्ति भक्ति
११) वि-जड़ित
१२) पूजा
१३) विस्थापित
१४) एक नारियल के पेड़ से बातचीत
१५) टूटन
१६) संप्रति
१७) दो कवित्त
१८) नेहरू चाचा
१९) नहीं पराजय
२०) गतिरोध

सूचना : परीक्षा में निर्धारित पुस्तकों पर ससंदर्भ - व्याख्या का प्रश्न अनिवार्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ -

१) कामायनी मे काव्य, संस्कृति और दर्शन : डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
२) कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ - डॉ. नगेन्द्र
३) कामायनी - कला और दर्शन - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
४) कामायनी पुनर्मूल्यांकन - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
५) कामायनी एक पुनर्विचार - गजानन माधव मुक्तिबोध
६) कामायनी की अलोचना प्रक्रिया - गिरिजा राय
७) नरेश मेहता का काव्य, संवेदना और शिल्प - अमियचंद्र पटेल
९) सुमित्रनंदन पंत - डॉ. नगेन्द्र
१०) कवि सुमित्रनंदन पंत - आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
११) सुमित्रानंदन पंत का नवचेतना काव्य - नेमनारायण जोशी

१२. सुमित्रानंदन पंत - जीवन और साहित्य, भाग २ - शांति जोशी

१३. नई कविता : स्वरूप और समस्या - डॉ. जगदीश गुप्त

१४. नई कविता : सीमाएँ और संभावनाएँ - डॉ. गिरिजाकुमार माथुर

१५. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - डॉ. संतोषकुमार तिवारी

१६. नई कविता की भाषा - डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

१७. नई कविता : संवेदना और शिल्प - मंजुल पुरोहित

१८. नये प्रतिनिधि कवि : डॉ. हरिचरण शर्मा

प्रश्नपत्र ६ : भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा (H - 202) अंक : १००

उद्देश्य -

१) भाषाविज्ञान के अंगों एवं विभिन्न शाखाओं का परिचय देना।

२) भाषाविज्ञान के सैद्धांतिक पक्ष एवं ऐतिहासिक विकास क्रम की जानकारी 'देना'।

३) हिंदी के शब्दभंडार एवं व्याकरणिक स्वरूप से परिचित कराना।

४) हिंदी के शब्दभेदों के विकासक्रम का विवरण देना।

५) साहित्य के अध्ययन में भाषा-विज्ञान की उपयोगिता स्पष्ट करना।

पाठ्यक्रम -

१) भाषा की परिभाषा, अभिलक्षण भाषा - व्यवस्था और भाषा - व्यवहार

२) भाषाविज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ - वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक

३) भाषाविज्ञान की शाखाएँ - कोशविज्ञान, लिपिविज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, समाजभाषा विज्ञान, भाषाभूगोल का स्थूल परिचय.

४) रूपविज्ञान - रूपविज्ञान का स्वरूप, रूपिम, वीरभाषा स्वरूप, रूपिम के भेद, संरचना की दृष्टि से मुक्त, बद्ध, संपृक्तरूप, अर्थ की दृष्टि से अर्थदर्शी (अर्थतत्व), संबंधदर्शी (संबंध तत्व). खंडात्मकता की दृष्टि से खंडात्मक और अधिखंडात्मक संबंधतत्व के भेद, रूपस्वनिमविज्ञान)

५) वाक्यविन्यास - वाक्य की परिभाषा, स्वरूप, वाक्य की आवश्यकताएँ - योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति, वाक्य का विश्लेषण उद्देश्य, विधेय, निकटस्थ, अवयव विश्लेषण, मूलवाक्य रुपांतरित वाक्य, आंतरिक संरचना, बाह्यसंरचना, वाक्य के भेद - रचना, क्रिया और अर्थ के आधारपर

६) अर्थविज्ञान - अर्थ की परिभाषा, स्वरूप, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थबोध के साधन पर्यायता, विलोमता, अनेकार्थता, अर्थ परिवर्तन के कारण,दिशाएँ, अर्थसंकोच, अर्थविस्तार, अर्थोत्कर्ष, अर्थापकर्ष.

७) भाषाविज्ञान और साहित्य - साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान के अंगों की उपयोगिता

८) भारतीय आर्यभाषाएँ, प्राचीन आर्यभाषाएँ और उनकी विशेषताएँ - पाली, साहित्यिक, प्राकृत, शौरसेनी महाराष्ट्री, मागधी, अर्ध-मागधी, पैशाची, अपभ्रंश.

९)	आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण ग्रियर्सन (अंतिम वर्गीकरण) और हरदेव बाहरी द्वारा किया गया वर्गीकरण, व्याकरणिक विशेषताएँ।

१०)	हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियां - वर्गीकरण पूर्वी हिंदी और पश्चिमी हिंदी की तुलना, खडी बोली, ब्रज और अवधी की व्याकरणिक विशेषताएँ

११)	हिंदी का शब्दभंडार - तत्सम, तद्‌भव, अर्धतत्सम देशी, विदेशी

१२)	हिंदी शब्दनिर्माण - उपसर्ग, प्रत्यय, समास

१३)	हिंदी का व्याकरणिक स्वरूप और विकास : रूपरचना, लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिंदी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों तथा अव्ययों का विकास।

१४)	देवनागरी लिपि - विकास, विशेषताएँ और सुधार के प्रयत्न

संदर्भ ग्रंथ :

१)	भाषाविज्ञान की भूमिका - डॉ.देवेन्द्रनाथ शर्मा

२)	भाषाविज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

३)	आधुनिक भाषाविज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

४)	सामान्य भाषाविज्ञान - डॉ. वैष्णव नारंग

५)	भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

## प्रश्नपत्र ७ : हिंदी साहित्य का इतिहास (H - 203)		अंक : १००

उद्देश्य -

१)	छात्रों को युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधारपर हिंदी साहित्य के इतिहास के कालविभाजन और नामकरण का परिचय देना।

२)	आदिकालन, भक्तिकालीन, रीतिकालीन व आधुनिक काल की प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि कवियों और उनकी रचनाओं से परिचित कराना।

३)	हिंदी गद्य के आविर्भाव के प्रधान कारणों व परिस्थितियों का परिचय कराना।

४)	हिंदी की प्रमुख गद्यविधाओं के विकासक्रम का परिचय एवं प्रमुख गद्यकारों का परिचय देना।

५)	आधुनिक हिंदी कविता के विकास के प्रमुख चरणों की प्रवृत्तियों, उपलब्धियों तथा सीमाओं से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम

१)	हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन की परंपरा का सामान्य परिचय।

२)	हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन, कालविभाजन के आधार, भाषा, साहित्य, भाषाक्षेत्र प्रथम साहित्यकार.

३) आदिकालीन परिस्थितियाँ - धार्मिक राजनैतिक, सामाजिक,साहित्यिक, और उनका तत्कालीन साहित्यपर प्रभाव ।

४) रासो काव्य की परंपरा - 'रासो' शब्द विभिन्न अर्था रासो के प्रकार - जैन रासो धार्मिक रासो, वीर रासो, रासो काव्य की प्रवृत्तियां ।

५) गोरखनाथ, चंदवरदाई, खुसरो, विद्यापति का साहित्यिक परिचय.

६) भक्तिकाल - भक्तिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि - सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक ।

७) निर्गुण भक्ति (काव्य) साहित्य और उसकी शाखाएँ प्रेमाश्रयी, ज्ञानाश्रयी दोनों की प्रमुख प्रवृषियां।

८) सगुण भक्ति साहित्य और उसकी शाखाएं रामभक्ति, कृष्णभक्ति । दोनों की प्रमुख प्रवृत्तियां ।

९) भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक उपादेयता जायसी, कबीर, सूरदास और तुलसीदास के साहित्य के संदर्भ में ।

१०) भक्तिकालीन नीति - साहित्य का सामान्य परिचय

११) भक्तिकालीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय, जायसी, कबीर, सूरदास, तुलसीदास मीरा, नंददास, रसखान, रहीम.

१२) रीतिकाल - रीतिकाल की राजनीतिक धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक परिस्थितियां.

१३) रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत साहित्य तथा भक्तिकालीन हिंदी साहित्य का प्रभाव ।

१४) रीतिकालीन साहित्य - रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त की विषयवु और शैलीगत प्रवृत्तियाँ.

१५) रीतिकालीन साहित्य में श्रृंगार वर्णन ।

१६) रीतिकाल का श्रृंगारेतर साहित्य - भक्ति, नीति, वीर ।

१७) रीतिकालीन प्रमुख कवियों का परिचय - चिंतामणि देव, केशवदास, सेनापती, मतिराम, पद्माकर घनानंद, भूषण, बिहारी ।

(क) आधुनिक काल -

१) हिंदी गद्य के लिए कारणीभूत परिस्थितियां

२) भारतेन्दुयुगीन हिन्दी गद्य - साहित्य का स्वरूप और विशेषताएं ।

३) द्विवेद्वीयुगीन हिन्दी गद्य - साहित्य का स्वरूप और सामान्य विशेषताएं - साहित्यविषयक मान्यता राष्ट्रीय भावना, सुधारवादी दृष्टि, भाषा - सुधार

(ख) हिन्दी गद्य - विधाओं का विकास :

१) हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास - प्रेमचंद युग प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग, संबंधित युग के उपन्यास साहित्य की कथ्य एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय । प्रधान उपन्यासकारों का सामान्य परिचय - प्रेमचंद जैनेन्द्रकुमार, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय यशपाल, वृन्दावनलाल वर्मा, रामदरश मिश्र फणीश्वरनाथ रेणु ।

२. **हिंदी कहानी साहित्य का विकास -** प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, नई कहानी, साठोत्तर कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी, संबंधित युग अथवा धारा के कहानी साहित्य की कथ्य एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय । प्रधान कहानीकारों का विशेष परिचय - प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेन्द्रकुमार कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, उषा प्रियवंदा, ज्ञानरंजन ।

३. **हिंदी नाटक का उद्‌भव और विकास -** भारतेन्दु पूर्व युग, भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्त युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग, (संबंधित युग के नाट्य साहित्य की कथ्य एवं शिल्पगत प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय) प्रधान नाटककारों भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रसाद, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश लक्ष्मीनारायण मिश्र, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष.

४. **हिन्दी निबंध का विकास -** भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग, (संबंधित युग के आलोचना साहित्य की सामान्य विशेषताएं) । प्रधान निबंधकारों का सामान्य परिचय - पं. प्रताप नारायण मिश्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आ. हजारीप्रसाद द्विवेदीय कुबेरनाथ राय, हरिशंकर परसाई ।

५. **हिंदी आलोचना का उद्‌भव और विकास -** भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग, शुक्लोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग (संबंधितह युग के आलोचना साहित्य की सामान्य विशेषताओं का परिचय) - आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी, आ. रामचंद्र शुक्ल, आ. नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवरसिंह.

(ग) आधुनिक हिंदी काव्य का विकास -

१. भारतेंदुयुगीन हिंदी कविता की सामान्य प्रवृत्तियां । भारतेंदुयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय : भारतेंदु हरिश्चंद्र, पं. बदरीनारायण चौधरी, प्रेमघन ।

२. द्विवेदीयुगीन हिंदी काव्य की सामान्य प्रवृत्तिया - द्विवेदीयुगीन प्रतिनिधि कवियों का सामान्य परिचय, मैथिलीशरण गुप्त, पं. श्रीधर पाठक.

३. राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा की कविता की सामान्य प्रवृत्तियाँ प्रधान कवि माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर

४. छायावादी कविता : उद्‌भव के कारण, प्रमुख प्रवृत्तियां, सीमाएं, प्रमुख छायावादी कवि, पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी

५. प्रगतिवादी कविता - उद्‌भव के कारण, सीमाएं सामान्य प्रवृत्तियां, प्रधान कवि पंत, नागार्जुन, निराला, केदारनाथ अग्रवाल

६. प्रयोगवादी कविता - उद्‌भव के कारण प्रमुख प्रवृत्तियां

७. नई कविता - प्रमुख प्रवृत्तियां : प्रमुख कवि - अज्ञेय मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, नरेश मेहता, रघुवीर सहास.

८. साठोत्तर कविता - साठोत्तर कविता की सामान्य प्रवृत्तियां, साठोत्तरकाल के प्रमुख कवि - धूमिल, दुष्यंतकुमार, केदारनाथ सिंह.

संदर्भग्रंथ -

१)	हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

२)	हिंदी साहित्य का इतिहास - संपा. डॉ. नगेन्द्र

३)	हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

४)	हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाबराय

५)	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह

६)	हिंदी साहित्य की भूमिका - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

७)	हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा

८)	हिंदी साहित्य : एक परिचय - डॉ. त्रिभुवन सिंह

९)	हिंदी रीति साहित्य - डॉ. भगीरथ मिश्र

१०)	रीतिकाव्य की भूमिका - डॉ. नगेन्द्र

११)	रीतियुगीन काव्य - डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा

१२)	हिंदी रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव - डॉ. दयानंद शर्मा

१३)	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

१४)	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य - रामरतन भटनागर

१५)	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक - डॉ. रीताकुमार

१६)	नये प्रतिनिधि कवि - डॉ. हरिचरण शर्मा

१७)	हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि - डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना

१८)	हिंदी साहित्य की नवीन विधाए - डॉ. कैलासचंद्र भाटिया

१९)	हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार - डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

२०)	हिंदी उपन्यास - उद्‌भव और विकास - डॉ. सुरेश सिन्हा

२१)	उपन्यास : स्थिति और गति - डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर

२२)	हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा - श्रीनारायण चतुर्वेदी दद्‌दा.

प्रश्नपत्र ८ : विशेष स्तर - वैकल्पिक

## विकल्प १ - अनुवाद विज्ञान (H - 204)	अंक : १००

उद्देश्य -

१)	अनुवाद : परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व, व्याप्ति की जानकारी देना।

२)	अनुवाद के साथ भाषाविज्ञान और शैली विज्ञान के संबंध का परिचय देना।

३)	अनुवाद के विभिन्न रूप, प्रक्रियाएँ, सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष को अवगत कराना।

४)	अनुवाद की समस्याएं, एवं आवश्यकता को रेखांकित करना।

पाठ्यक्रम -

१)	अनुवाद का स्वरूप : परिभाषा महत्त्व, व्याप्ति, अनुवाद कला या विज्ञान

२)	अनुवाद प्रक्रिया : मूलभाषा का पाठबोधन और व्याख्या, लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति, अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थातरण, पुनस्सर्जन।

३)	अनुवाद का मौखिक तथा लिखित स्वरूप, महत्त्व एवं वर्तमानकाल में उसकी उपयोगिता, अनुवादक की योग्यता.

४)	अनुवाद के प्रकार - प्रक्रिया के आधार पर - शब्दानुवाद -भावानुवाद

छायानुवाद, रूपांतरण, गद्य-पद्य के आधारपर गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, विद्या के आधारपर नाट्यानुवाद, कव्यानुवाद, कथानुवाद आदि।

५)	अनुवाद कार्य में सहायक साधन - द्विभाषिक कोष, त्रिभाषिक कोष, वर्णनात्मक कोष, सूचियाँ कोष, विषय विशेष के ग्रंथ, संगणक उक्त साधनों के उपयोग में सावधानी।

६)	अनुवाद और लिप्यंतरण : आवश्यकता, समस्याएं

७)	अनुवाद और भाषाविज्ञान : भाषाविज्ञान के अंग और अनुवाद

अनुवाद और रूपविज्ञान, अनुवाद और वाक्यविज्ञान, अनुवाद और अर्थविज्ञान.

८)	अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष - समाजविशेष.

एवं संस्कृति विशेष के संदर्भ में उपस्थित सामग्री में देशीय संदर्भ एवं अंतर के कारण अनुवाद कार्य में उत्पन्न समस्याएं।

९)	रचनात्मक साहित्य के अनुवाद का स्वरूप आवश्यकता, समस्याएं और सीमाएं। वाणिज्य और व्यवसाय के क्षेत्र में सामग्री के अनुवाद का स्वरूप, आवश्यकताएं, समस्याएं।

१०)	बँक तथा अन्य कार्यालयों में हिंदी, अनुवाद की सामग्री का स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएं।

११)	कम्प्यूटर अनुवाद की आवश्यकता, समस्याएं, सीमाएं।

१२)	अनुवाद की समस्याएं - मुहावरों और कहावतों का अनुवाद, अलंकारों का अनुवाद, काव्यानुवाद, नाटकानुवाद.

१३)	अनुवाद कार्य में शैली विचार - अनुवाद की शैली का स्वरूप एवं विशेषता, विविध शैलियों का निर्वाह अथवा परिवर्तन की संभावनाएं, प्रतिबद्धता एवं स्वतंत्रता का प्रश्न.

१४)	अनुवाद समीक्षा, आवश्यकता और निकष।

संदर्भ ग्रंथ :

१)	अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - डॉ. सुरेशकुमार

२) अनुवाद विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी

३) अनुवाद विज्ञान - सिद्धांत और अनुप्रयोग - संपा. डॉ. नगेन्द्र

४) अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग - डॉ. जी. गोपीनाथन्

५) अनुवाद सिद्धांत और समस्याएं - डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी

६) अनुवाद बोधध - संपा. डॉ. गार्गी गुप्त

७) काव्यानुवाद की समस्याएं साहित्य का अनुवाद - डॉ. भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी

८) अनुवाद, भाषाएं : स्मस्याएं - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

९) अनुवाद और मशनी अनुवाद - वृषभ प्रसाद जैन

१०) अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर

११) अनुवाद विज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति - संपादक - मु. ब. शहा, डॉ. पीतांबर सरोदे ।

१२) अनुवाद : विविध आयाम, डॉ. मा. गो. चतुर्वेदी, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी.

विकल्प २ - प्रयोजनमूलक हिंदी (H - 205) अंक : १००

उद्देश्य -

१) हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों और प्रयोजनमूलक शैलियों का परिचय देना ।

२) देवनागरी लिपि का स्वरूप, विशेषताएं एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी की दृष्टि से उसकी उपयुक्तता।

३) हिंदी की मानक वर्तनी का परिचय देना ।

४) पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप एवं निर्माण के सिद्धांतों का परिचय देना ।

५) राजभाषा विषयक सरकारी नीति कार्यालयों में हिंदी प्रयोग का आवश्यकता एवं विविध प्रकार के पत्रलेखन की क्षमता से छात्रों को अवगत कराना ।

पाठ्यक्रम -

१) हिंदी भाषा की प्रयुक्तियां, साहित्यिक प्रशासनिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक, खेलकूद जनसंपर्कीय, विज्ञापन और बोलचाल संबंधी ।

२) हिंदी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ, संवाद, वर्णनात्मक विवरणात्मक, भावात्मक, विचारात्मक, पत्रलेखन ।

३) देवनागरी लिपि : स्वरूप और विशेषताएं, गुण-दोष सुधार के प्रयत्न, मानक वर्णमाला, टंकन, मुद्रण एवं संगणक की सुविधा ।

४) अंक - नागरी अंक, भारतीय अंकों के आंतरराष्ट्रीय रूप, अंकों की मानक वर्तनी ।

५) वर्तनी - समस्याएं, मानक रूप देने का प्रयास केंद्रीय हिंदी निदेशालय के वर्तनी संबंधी नियम.

६) पारिभाषिक शब्दावली - अर्थ, आवश्यकता, शब्दनिर्माण की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, शब्दनिर्माण की प्रक्रिया .

७) राजभाषा हिंदी विषयक सरकारी नीति - आरंभ से आजतक विकास के चरण । विविध सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति ।

८) कार्यालयी - पारिभाषिक शब्दावली, वाक्य एवं वाक्यांश वाक्यों में प्रयोग ।

९) व्यापारिक पत्रलेखन -स्वरूप प्रकार ।

  (क) पूछताछ - माल, सुविधाएं, मूल्यसूची, शर्ते

  (ख) आदेश - माल के आदेश प्राप्त कररणे - देने रद्द कररने आदि संबंधी पत्राचार ।

  (ग) संदर्भ - या परिचय पत्र ।

  (घ) शिकायती पत्र - माल न भेजने, कम भेजने, घटिया या खराब माल, खराब वेष्टन, अधिक मूल्य आदीसंबंधी पत्राचार.

  (च) तकादे या भुगतान संबंधी पत्राचार

  (छ) साखपत्र

  (ज) आढत या एजन्सी संबंधी पत्र

१०) आवेदन या प्रार्थना पत्र

  (क) नौकरी के लिए

  (ख) कार्यालयीन छुट्टी (छुट्टियों के विविध प्रकार) स्थानांतरण, स्थायीकरण, पदनाम, कार्यपरिवर्तन सरकारी मकानसंबंधी आदि

  (ग) वेतन व धनसंबंधी - वेतन, वेतनवृद्धि, अतिरिक्त वेतन, भत्ते, समयोपरि भत्ते, विशेष वेतन, पदोन्नती वरिष्ठता, भविष्यनिधी, अग्रिम धन एवं विविध भुगतानों से संबंधित आवेदन पत्र ।

११) सरकारी पत्राचार - स्वरूप, प्रकार, प्रारूप, पत्र, परिपत्र, ज्ञापन कार्यालय, आदेश, सरकारी पत्र, अनौपचारिक पत्र, पृष्ठांकन, अधिसूचना, ससंस्ताव, प्रेस विज्ञाप्ति, सार-टेलेक्स, मितव्यय पत्र, अनुस्मारक, सूचना.

१२) टिप्पणीलेखन - उद्देश्य, सिद्धांत, स्वरूप, विशेषताएं और प्रकार, सूक्ष्म टिप्पणी, संपूर्ण टिप्पणी, अनुभागीय टिप्पणी, नित्यक्रमिक टिप्पणी आदि ।

१३) संक्षेपण - उद्देश्य, विविध प्रकार, स्वतंत्र संक्षेपण प्रवहनमान संक्षेपण, तालिका संक्षेपण, स्वयंपूर्ण संक्षेपण । अनौपचारिक टिप्पणी - आनुषंगिक टिप्पणी ।

संदर्भ ग्रंथ -

१) राजभाषा हिंदी - डॉ. कैलासचंद्र भाटिया

२) राजभाषा हिंदी - भोलानाथ तिवारी

३) प्रयोजनमूलक व्यवहारिक हिंदी - डॉ. ओमप्रकाश सिंहल

४) प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयीन हिंदी - डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी

५) कार्यालयी हिंदी - डॉ. ठाकूरदास

६) सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग - डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव

७) हिंदी भाषा - स्वरूप और विकास - कैलाशचंद्र भाटिया, मोतीलाल चतुर्वेदी

८) हिंदी : उद्‌भव, विकास और रूप डॉ. हरदेव बाहरी

९) हिंदी में सरकारी कामकाज करने की विधि - रामविनायक सिंह

१०) हिंदी आरेखन और टिप्पण - ओमप्रकाश शर्मा

११) प्रशासनिक और व्यापारिक पत्रव्यवहार (खंड १-२) - एन. ई. विश्वनाथ अय्यर।

१२) देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

१३) हिंदी भाषा : संदर्भ और संरचना - प्रो. सूरजभान सिंह

१४) हिंदी की लिपि संरचना - डॉ. भोलानाथ तिवारी

१५) नागरी लिपि - रूप और सुधार - मोहन ब्रिज

१६) पारिभाषिक शब्दावली की विकासयात्रा - संपादक गार्गी गुप्त

१७) कम्प्यूटर और हिंदी - डॉ. हरिमोहन

१८) पारिभाषिक शब्दसंग्रह (अंग्रेजी - हिंदी) - केंद्रीय हिंदी निदेशालय

मूल्यमापन के संदर्भ में -

- मूल्यमापन करते वक्त छात्र की स्मरणशक्ती के एवज उसके भाषाविषयक, साहित्यिक तथा संज्ञापन के कौशल्य को जाचा जाएगा।
- मूल्यमापन में छात्र द्वारा दी गई जानकरी की मात्रा तथा उसकी उचितता के साथ साथ छात्र की स्वयं की विचार करने की, अपने विचारों को प्रकट करने की क्षमता तथा विचारों की स्पष्टता इन मुद्दोंपर भी ध्यान दिया जाएगा।

❑ ❑ ❑